eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

कुमाऊँ की राष्ट्रवादी पत्रकारिता और क्रान्तिकारी आन्दोलन

[1]**डा0 ज्योति साह**

[2]एसोसियेट प्रोफेसर, 'इतिहास', दीन दयाल उपाध्याय राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, सीतापुर

Received: 15 June 2018, Accepted: 15 July 2018, Published on line: 15 Sep 2018

Abstract

भारतीय राष्ट्रीय संग्राम में पत्रकारिता की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। देश में क्षेत्रीय स्तर पर जनता में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति चेतना जागृत करने, आन्दोलन को लोकप्रिय बनाने, जनता को लोकतांत्रिक संस्थाओं से अवगत कराने और सरकार की दमनात्मक नीतियों की समीक्षा करके उनके विरूद्ध आन्दोलित करने के कठिन एवं महत्वपूर्ण कार्यों के सम्पादन में राष्ट्रवादी पत्रकारिता ने महती भूमिका का निर्वहन किया है। विभिन्न क्षेत्रों से अलग अलग भाषाओं में निकलने वाले समाचार पत्र राष्ट्रीय आन्दोलन की विभिन्न प्रवृत्तियों उदारवादी, उग्रवादी, क्रान्तिकारी, गांधीवादी एवं समाजवादी आदि सभी आन्दोलनों के प्रति जनता में चेतना का प्रसार कर रहे थे। कुमाऊँ के प्रमुख समाचार पत्रों में शक्ति, कर्मभूमि, गढ़वाली, स्वाधीन प्रजा, तरूण कुमाऊँ, पुरूषार्थ, कुमाऊँ, कुमुद आदि थे, जो **कुमाऊँ में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार कर रहे थे। इस शोध पत्र के माध्यम से कुमाऊँ की राष्ट्रवादी पत्रकारिता एवं स्थानीय जनमानस के** क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

मुख्य शब्द – राष्ट्रवादी पत्रकारिता, क्रान्तिकारी, **कुमाऊँ।**

Introduction

उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में वायसराय लिटन और कर्जन के प्रतिक्रियावादी शासन के फलस्वरूप बीसवीं सदी के प्रारम्भ में संगठित क्रान्तिकारी दल कार्य करने लगे थे। इनमें बंगाल के **अनुशीलन समिति** और **युगान्तर** तथा महाराष्ट्र का **अभिनव भारत** प्रमुख थे।[1]ये तीनों दल स्वाधीनता के लिए सशस्त्र क्रान्ति चाहते थे। हिन्दू धर्मग्रन्थों और 1857 की क्रान्ति से प्रेरित ये क्रान्तिकारी व्यक्तिगत क्रियाशीलता पर विश्वास करते थे, जिसे सरकार आतंकवाद के नाम से पुकारती थी। जनता उनके आत्मत्याग, वीरता और देशभक्ति की भावना की प्रशंसक तो थी, परन्तु उनके कार्यों को अपनी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

दैनिक समस्याओं से जोड़ पाने में असमर्थ थी।[2]प्रारम्भ में देश में क्रान्तिकारियों द्वारा स्वंय प्रकाशित **युगान्तर, संध्या, वन्दे मातरम्, नवशक्ति, गदर** आदि समाचार पत्रों के अतिरिक्त अन्य पत्रों की क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति कोई विशेष सहानुभूति नहीं थी। कुमाऊँ से प्रकाशित होने वाले प्रारम्भिक राष्ट्रवादी पत्रों की भी यही नीति थी।

कुमाऊँ में प्रारम्भिक आतंकवादी क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रत्यक्ष प्रभाव भी नगण्य था। जनश्रुतियों के अनुसार कुमाऊँ की भूमि का प्रयोग प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों ने अपने छिपने के स्थान के रूप में किया। लार्ड हार्डिंग पर बम डालने के पश्चात रास विहारी बोस अल्मोड़ा के पाताल देवी नामक मन्दिर में साधु वेश में छिप गये।

कुमाऊँ के स्थानीय राष्ट्रवादी कांग्रेस से प्रभावित थे और संवैधानिक तरीकों के अतिरिक्त सरकार का विरोध करने के अन्य किसी भी हिंसात्मक विद्रोह के विरूद्ध वनान्दोलन में तो जंगलों में आग लगाने जैसी प्रतिरोध की घटना को हिंसात्मक मानकर निन्दा की गयी तथा आग लगाने वाले ग्रामीणों से स्थानीय नेताओं ने अपनी पृथकता भी साबित करने की कोशिश की।[3] प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों को स्थानीय नेता उपद्रवकारी समझते थे। स्थानीय राष्ट्रवादियों द्वारा संचालित–संपादित राष्ट्रवादी पत्रकारिता की भी प्रारम्भिक क्रान्तिकारियों के विषय में यह ही धारणा थी। कुमाऊँ के प्रमुख समाचार पत्र शक्ति ने रौलेक्ट एक्ट का विरोध करते समय क्रान्तिकारियों को अस्थिरचित्त उपद्रवकारी लिखा।–''जिस प्रकार नादिरशाही ने थोड़े से लोगों के कसूर से सारी दिल्ली में तबाही मचा दी थी, उसी प्रकार कुछ थोड़े से अस्थिरचित्त उपद्रवकारियों के पाप से सारे भारत पर काले कानूनों का ऐसा काला नाग फांस छोड़ा जा रहा है कि सर्वतोन्मुखी यही कहा जा रहा है कि इन कानूनों के पास होने से वैध आन्दोलन का भी अन्त हो जायेगा।''[4]

असहयोग आन्दोलन के पश्चात उत्पन्न अनिश्चित्ता की स्थिति में क्रान्तिकारियों को रूस की 1917 की क्रान्ति और साम्यवादी विचारों ने प्रभावित किया। सन् 1925–26 में पुनः सक्रिय इन क्रान्तिकारियों ने शचीन्द्रनाथ सान्याल के नेतृत्व में हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ की स्थापना की और दल का रैवोल्यूशनरी नामक पर्चा प्रकाशित किया, जिसमें लिखा था– क्रान्ति का उद्देश्य ऐसे समाज की स्थापना है, जिसमें मनुष्य द्वारा मनुष्य का शोषण न हो।[5]

हिन्दुस्तानी प्रजातन्त्र संघ के कार्यों को क्रियान्वित करने के लिए धन की आवश्यकता ने इन क्रान्तिकारियों को काकोरी में रेल रोककर रेल विभाग का खजाना लूटने के लिए विवश किया। सरकार

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

ने क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चलाया। सन् 1925 में प्रारम्भ इस मुकदमें में अशफाक उल्ला खां, राम प्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, राजेन्द्र लाहिड़ी को फांसी, चार अन्य को आजीवन कारावास और 17 को लम्बी सजायें सुनाई गई। चन्द्रशेखर आजाद पकड़े नहीं जा सकें।[6] कांग्रेस के मोती लाल नेहरू तथा जवाहर लाल नेहरू क्रान्तिकारियों की सहायतार्थ बनी कानूनी सीमित में शामिल हुए थे। राष्ट्र के प्रमुख नेताओं द्वारा क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रवैया अपनाने पर क्रान्तिकारियों के प्रति समाचारपत्रों का दृष्टिकोण भी बदलने लगा। प्रभा में भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन शीर्षक से विस्तृत लेख प्रकाशित हुआ ,जिसमें क्रान्तिकारियों के प्रति श्रद्धापूर्ण भाषा का प्रयोग किया गया। [7]

साम्यवादी विचारधारा ने क्रान्तिकारियों को नवीन समाज का कार्यक्रम दिया। पहले के आतंकवादी क्रान्तिकारी देश को स्वतन्त्र तो कराना चाहते थे, पर स्वतन्त्रता के पश्चात कैसी शासन प्रणाली होनी चाहिए, इस पर उन्होंने ध्यान नही दिया था। हिन्दू–मुस्लिम पूर्वाग्रह से मुक्त कराकर क्रान्तिकारियों को एक वैचारिक आधार प्रदान करने का कार्य साम्यवादियों ने ही किया। इस नवीन विचारधारा से युक्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का जनता पर अधिक गहरा असर पड़ा। उत्तर प्रदेश में इलाहाबाद से प्रकाशित होने वाले **स्वराज्य** और **कर्मयोगी** पत्र क्रान्तिकारी विचारों का प्रसार कर रहे थे।[8]

लाहौर में सन् 1926 में नौजवान सभा की स्थापना करने वाले भगत सिंह, सुखदेव, भगवती चरण वोहरा आदि पर समाजवादी विचारों का अधिक प्रभाव पड़ा था।[9] सन् 1928 में इन्होंने हिन्दुस्तान प्रजातन्त्र संघ के सदस्यों चन्द्रशेखर आजाद आदि के साथ मिलकर दिल्ली में हिन्दुस्तान समाजवादी प्रजातन्त्र संघ की स्थापना की।[10] हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातन्त्र संघ के कार्यों दिसम्बर, 1928 में लाहौर में सांडर्स की हत्या, केन्द्रीय सभा में बमों को फेंकना, दिसम्बर, 1929 में इरविन की रेलगाड़ी को उड़ाने का प्रयास करना तथा 1930 में पंजाब और संयुक्त प्रान्त में आतंकवादी कार्यवाही ने क्रान्तिकारियों को लोकप्रिय बना दिया था। गुप्तचर ब्योरों के गुप्त विवरण टेरेरिज्म इन इंडिया (1927–1936) में कहा गया था कि – कुछ समय के लिए तो उन्होंने उस समय के अग्रणी राजनीतिक व्यक्तिव के रुप में मि. गांधी को भी मात दे दी थी।[11]

कानपुर बोल्शेविक कांस्पिरेसी केस, काकोरी कांड, लाहौर षडयन्त्र केस, मेरठ षडयन्त्र केस आदि पर पत्रकारिता ने विस्तार से लिखा। हिन्दी की **मर्यादा, प्रताप, सरस्वती, श्री शारदा, भविष्य, वर्तमान, प्रभा, आज, अभ्युदय, माधुरी, स्वदेश, श्रमिक, साम्यवाद, प्रणवीर और कर्मवीर** जैसी

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

पत्र–पत्रिकायें निरन्तर क्रान्तिकारियों के साहस और बलिदान का वर्णन विस्तार से कर रहे थे। कानपुर से प्रकाशित होने वाले प्रताप समाचारपत्र से अनेक क्रान्तिकारी भगत सिंह, रामप्रसाद बिसिमल आदि प्रत्यक्ष जुड़े थे और छद्म नामों से लेख लिखते थे।[12]

कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्र शक्ति में भी क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति दृष्टिकोण में परिवर्तन दिखाई देने लगा था। सन् 1919 में जहां वह क्रान्तिकारियों के लिए 'अस्थिरचित्त उपद्रवकारी' का सम्बोधन करता है, वहीं 1925 में वह क्रान्तिकारी आन्दोलन का कारण ब्रिटिश सरकार की नीति को बताकर उसकी आलोचना करता है।

विचारणीय बात यह है कि क्रान्तिकारी सशस्त्र क्रान्ति क्यों चाहते है? यदि नौकरशाही या कहिये लार्ड रीडिंग और लार्ड लिटन इस की तलेटी पर पहुंचने का कष्ट करें तों कठिनता शीघ्र ही सरलता में परिणत हो जायेगी। पर यहां इसकी किसी को चिन्ता नहीं, यहां तो चिन्ता यही है कि भारत किस प्रकार सदा ब्रिटेन का गुलाम बना रहे और कभी चूं तंक न कर सके। [13]

समाजवाद और साम्यवाद के बढ़ते प्रभाव को रोकने के लिए ब्रिटिश सरकार ने सन् 1928 में दो दमनकारी कानून –सार्वजनिक सुरक्षा बिल और श्रम विवाद बिल विधान सभा में प्रस्तुत किया। इन बिलों का सभी राष्ट्रीय नेताओं ने विरोध किया। क्रान्तिकारियों ने इन बिलों का विरोध करने के लिए केन्द्रीय असेम्बली में उस समय बम डालने का निश्चय किया जब इन दोनों बिलों पर बहस चल रही थी। भगत सिंह और बटुकेश्वर दत्त ने बम फेंककर इंकलाब जिन्दाबाद का नारा लगाया और हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातन्त्र संघ के पर्चे बांटते हुए अपने को गिरफ्तार करा दिया।[14] इन पर्चों में लिखा गया था– राष्ट्रीय दमन और अपमान की इस उत्तेजनापूर्ण परिस्थिति में अपने उत्तरदायित्व की गम्भीरता को महसूस कर हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातन्त्र संघ ने अपनी सेना को यह कदम उठाने की आज्ञा दी है। इस कार्य का प्रयोजन है कि कानून का यह अपमानजनक प्रहसन समाप्त कर दिया जाये।[15]

इसी मध्य संघ के लाहौर के गुप्त केन्द्र और बम के कारखाने का पता पुलिस को लग गया। देशभर से चन्द्रशेखर आजाद को छोड़कर पार्टी के अधिकांश सभी नेता गिरफ्तार कर लिये गये। लाहौर में सन् 1929 में इन 16 क्रान्तिकारियों पर लाहौर षड़यन्त्र केस चला।[16]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

समाचारपत्रों ने क्रान्तिकारियों के कार्यों और लाहौर षड़यन्त्र केस की कार्यवाही का प्रकाशन अपने विभिन्न अंको में करके जनता में क्रान्तिकारियों के विचारों का प्रसार किया। कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्रों ने भी क्रान्तिकारियों के विषय में समय–समय पर अपने पत्र में लेख समाचार प्रकाशित किए। सितम्बर, 1929 में राजनैतिक कैदियों की हैसियत में सुधार के लिए की गयी भूख–हड़ताल में क्रान्तिकारी यतीन्द्रनाथ दास की मृत्यु हो गयी। इस घटना ने जनता में क्रान्तिकारियों के प्रति सहानुभूति और सरकार के प्रति आक्रोश की भावना को तीव्र किया। कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्र शक्ति ने इस समाचार को '63 दिन का उपवास–देशभक्त यतीन्द्रनाथ का स्वर्गवास–स्वतन्त्रता के संग्राम में अपूर्व बलिदान' शीर्षक से प्रकाशित किया। इसमें क्रान्तिकारियों के प्रति प्रथम बार शक्ति ने सहानुभूति का प्रदर्शन किया।[17] 7 अक्टूबर, 1930 को लाहौर मुकदमें का फैसला सुनाया गया। भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव को फांसी तथा अन्य क्रान्तिकारियों को काले पानी की सजा दी गयी। देश के अन्य भागों की तरह कुमाऊँ भी आन्दोलित हो गया। कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्र शक्ति ने 'सरदार भगत सिंह– राजगुरू और सुखदेव को फांसी –सारी प्रार्थनायें बेकार–लाशें भी न दी गयीं' शीर्षक से समाचार प्रकाशित किया। अल्मोड़े में इस घटना के विरोध में नवयुवकों ने जुलूस निकाला, जिसका विवरण देते हुए शक्ति ने लिखाः–

गत 24 ता.की रात्रि को इस समाचार के पहुंचने पर कि लाहौर षड़यन्त्र के अभियुक्त सरदार भगत सिंह, राजगुरू और सुखदेव फांसी के तख्तों पर लटका दिए गए– अल्मोड़ा के नवयुवकों में भारी खलबली मच गयी। रातोंरात लाला बाजार में कुछ नवयुवकों ने एक मातमी जलूस का संगठन किया, सब नंगे पांव और नंगे सिर थे, सबके चेहरों से एक अजीब उदासी और बेचैनी टपक रही थी। रात में ही नवयुवकों ने बाजारों बाजार जलूस आदि निकालकर अपने चित्त की उद्विग्नता को कुछ हल्का किया। किन्तु यह शोकाग्नि जल्द ही शांत होने वाली न थी। इसलिए रात में ही नगर में ता. 25 को हड़ताल की घोषणा की गयी। जबकि लोग आधी नींद ले चुके थे। ..... नवयुवक बेचैन थे, सरदार भगत सिंह की फांसी ने सचमुच वह दिखा दिया कि नवयुवकों में उनके प्रति कितना सम्मान है। [18]

नवयुवकों को सांत्वना देते हुए शक्ति ने 'युवकों सावधान' शीर्षक से सम्पादकीय प्रकाशित किया, जिसमें उन्हें गांधी के मार्ग पर चलने को कहा गयाः–

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

देश की तरूण आत्माओं से हमारा निवेदन है वे अपने जोश को काबू में रखें। सरकार ने गलती की है, उसे वे न दुहरावें। धैर्य और शान्ति से महात्मा जी के बताये मार्ग पर चलने की यदि उनमें क्षमता न हो तो वो चुपचाप दूर से देखते रहें। युवकों सावधान। सरदार भगत सिंह आदि के पथ के पथिक न बनों,वह विकट है, असाध्य है। भारत उस पथ से अपने लक्ष्य तक नही पहुंच सकता।[19]

कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्र भगत सिंह की गिरफ्तारी के समय से ही उन पर लेख प्रकाशित कर रहे थे। शक्ति ने नवम्बर,1930 को भगत सिंह और उनके पिता के जेल में मिलने का वर्णन किया।[20]

अन्यत्र शक्ति ने भगत सिंह के अंतिम पत्र को, जो भगत सिंह ने अपने छोटे भाई कुलतार सिंह को लिखा, प्रकाशित किया। यह पत्र शक्ति ने आज से उदघृत किया।[21] भगत सिंह ने फांसी लगने से बीस दिन पूर्व ही इस पत्र को लिखा था। स्थानीय राष्ट्रवादी अपने भाषणों में भगत सिंह की शहादत का उल्लेख करते रहते थे। शक्ति ने जनवरी, 1932 में बद्रीदत्त पाण्डे के भाषण को प्रकाशित किया, जिसमें उन्होंने सरकार पर भगत सिंह का हत्यारा होने का आरोप लगाया था और लाल लाजपत राय को पुलिस द्वारा पीटे जाने को क्रान्तिकारी कार्यों का कारण बताया था।[22]

1933 के दौरान शक्ति ने सम्पूर्ण देश में सरकार द्वारा की गयी इस दमनकारी कार्यवाही का विस्तृत विवरण 'देशव्यापी क्रान्तिदल– चारों ओर गिरफ्तारी और तलाशियाँ' शीर्षक से देते हुए लिखा :–

पुलिस ने गतमास से देशभर के कोने–कोने में तलाशियों और गिरफ्तारियों से धूम मचा दी है। कलकत्ता 26 जनवरी, का सम्वाद है कि पुलिस का यह विश्वास की भारत में भिन्न भिन्न प्रान्तों में ऐसे आदमी हैं, जो बगैर लाइसेंस के हथियार बनाते है तथा उन सबका उद्देश्य क्रान्तिकारी आन्दोलन करना है। इसी विश्वास की बुनियाद पर उसने आसाम,बिहार, वर्मा, यू.पी., पंजाब, मद्रास आदि प्रान्तों में अनेक स्थानों पर धावा मारा और कई व्यक्तियों की गिरफ्तारी की तथा शस्त्र बरामद किए। पुलिस शीघ्र ही एक भारतव्यापी षड़यन्त्र केस चलाने का विचार कर रही है। अभी दस गिरफ्तारियाँ हुई हैं, पर और बहुत सी गिरफ्तारियाँ होने की सम्भावना है। तलाशियाँ जारी हैं। [23]

eISSN 2581-8996
[Date]
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 1, Issue 02, July-Dec 2018

कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्र शक्ति ,स्वाधीन प्रजा, तरूण कुमाऊँ आदि से सम्बद्ध स्थानीय सम्पादक और लेखक गांधीवादी नीति पर ही विश्वास करते थे। फिर भी इन राष्ट्रवादियों द्वारा क्रान्तिकारियों के विषय में विस्तृत वर्णन देने से स्पष्ट होता है कि वह क्रान्तिकारियों की त्याग और बलिदान की भावना के प्रशंसक थे। इन समाचारपत्रों के दृष्टिकोण वास्तव में कुमाऊँ के राष्ट्रवादी नेताओं बद्रीदत्त पांडे, विक्टर मोहन जोशी, गोविन्द वल्लभ पन्त, मुकुन्दीलाल आदि के विचार थे। परन्तु कुमाऊँ के राष्ट्रवादी कांग्रेस समर्थक थे और क्रान्तिकारियों के साहस और बलिदान से प्रभावित होने के बावजूद क्रान्तिकारी आन्दोलन से न तो स्वयं और न ही स्थानीय जनता को प्रत्यक्ष रूप से जोड़ सके।

इसके बावजूद कुमाऊँ के राष्ट्रवादी पत्रों में क्रान्तिकारियों से सम्बन्धित प्रकाशित लेखों, समाचारों ने निश्चय ही जनता में उत्साह का संचार किया और जो लोग राष्ट्रीय आन्दोलन से किसी भी तरह से सम्बद्ध नहीं थे, वे आन्दोलन में प्रत्यक्ष रूचि लेने लगे। 1930 के बाद के सभी आन्दोलनों में क्रान्तिकारी निरन्तर जनमानस के लिए प्रेरणादायक रहे। इस प्रकार गांधीवादी आन्दोलन को विस्तार देने में भी इन क्रान्तिकारियों का भावनात्मक महत्व है।

सन्दर्भ–

1.उपाध्याय, विश्वमित्र – भारत का मुक्ति संघर्ष और रूसी क्रान्ति (1930–47), पृष्ठ–89–90

2. सिंह, जगमोहन और चमनलाल – भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ–18

3. शक्ति– सम्पदाकीय, समाचारपत्र, देशभक्त प्रेस, अल्मोड़ा–अंक 12जुलाई,1921

4. शक्ति– लेख–लोकमत का निरादर, समाचारपत्र, देशभक्त प्रेस, अल्मोड़ा–अंक 18 फरवरी,1919

5. उपाधयाय, विश्वमित्र – पूर्वोक्त, पृष्ठ–101

6. चन्द्र, विपन तथा अन्य – भारत का स्वतंत्रता संघर्ष, पृष्ठ–190

7. प्रभा–1 दिसम्बर, 1924

8. गुप्त , मन्मथनाथ– भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, पृष्ठ 82–83

9. सिंह, जगमोहन और चमनलाल – भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ–33,

10. सरकार, सुमित – आधुनिक भारत, राजकमल प्राकशन,नई दिल्ली,1992 पृष्ठ–307

11. सरकार, सुमित – पूर्वोक्त, पृष्ठ–308

12.. सिंह, जगमोहन और चमनलाल – पूर्वोक्त, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,2010, पृष्ठ–68

13. शक्ति– लेख–लाज रख ली, समाचारपत्र, देशभक्त प्रेस, अल्मोड़ा–अंक 10 फरवरी,1925
14. सिंह, अयोध्या – भारत का मुक्ति संग्राम, मैकमिलन इंडिया लिमिटेड,दिल्ली, 1977, पृष्ठ–570
15. सिंह, जगमोहन और चमनलाल – भगत सिंह और उनके साथियों के दस्तावेज, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 2010, पृष्ठ–254
16. सिंह, अयोध्या – पूर्वोक्त, पृष्ठ–570
17. शक्ति– समाचारपत्र, देशभक्त प्रेस, अल्मोड़ा–अंक 21 सितम्बर, 1929
18. शक्ति– समाचारपत्र, देशभक्त प्रेस, अल्मोड़ा–अंक –28 मार्च, 1931
19. शक्ति – युवकों सावधान (सम्पादकीय), 28 मार्च, 1931
20. शक्ति – सरदार भगत सिंह, 20 दिसम्बर, 1930
21. शक्ति – सरदार भगत सिंह का अन्तिम पत्र, 11 अप्रैल, 1931
22. शक्ति – 9 जनवरी, 1932
23. शक्ति – देशव्यापी क्रान्तिकारी दल..... 4 फरवरी, 1933